REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 10 | ISSUE - 10 | JULY - 2021

समाज में नए ट्रेंड स्थापित करने के उपकरण के रूप में फिल्में- एक अध्ययन

डॉ॰ दिलावर सिंह
असिस्टेंट प्रोफ़ेसर, शाह सतनाम जी बॉयज कॉलेज, सिरसा.

सारांश-

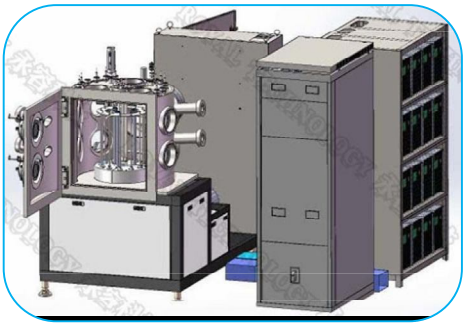

वर्तमान दुनिया में सिनेमा सबसे जटिल और शक्तिशाली कला है। यह हमारे अपने जीवन, हमारे आसपास के लोगों के जीवन और यहां तक कि हमारे समाज और संस्कृति का संचालन कैसे होता है, इसे बेहतर ढंग से समझने में हमारी मदद करता है। फिल्में हमारे राजनीतिक और आध्यात्मिक मामलों को भी प्रभावित करती हैं और हमारे जीवन के नए तरीकों को सोचने, महसूस करने और आगे बढ़ाने के लिए हमारी मदद करती है। वैश्वीकरण की वर्तमान दुनिया में आपसी संपर्क और मनोरंजन के लिए सब कुछ आसानी से उपलब्ध है। सांस्कृतिक आदान-प्रदान पहले आसान नहीं था लेकिन सूचना प्रौद्योगिकी और नई तकनीकी साधनों की मदद से सांस्कृतिक आदान-प्रदान ना बल्कि आसान हुआ है बल्कि तेज और प्रभावी हुआ है आज हर कोई टीवी, सोशल मीडिया पर वीडियो देखता है और ओटीटी प्लेटफॉर्म के बढ़ते प्रभाव ने तो सिनेमा जगत में नया भूचाल सा ला दिया है फिल्म उद्योग यकीनन आधुनिक समाज के सबसे प्रभावशाली क्षेत्रों में से एक है। सिटकॉम और कॉमेडी शो हमें हंसाते हैं, मनोवैज्ञानिक थ्रिलर हमें दुनिया को बेहतर दृष्टिकोण से देखने में मदद करते हैं, और ऐतिहासिक फिल्में हमें यह समझने में मदद करती हैं कि लोगों के रूप में कहां से आना है। हर वीडियो और हर फिल्म समाज का प्रतिनिधित्व करती है और राय बनाने और बदलने में हमारी सहायता करती है.

कीवर्ड्स: *फिल्म्स, सिनेमा, नए ट्रेंड, समाज.*

परिचय:

सिनेमा हमारे जीवन में सबसे अधिक प्रभावशाली व शक्तिशाली संचार माध्यम रहा है, और सिनेमा कला का वह रूप है, जो हमारे जीवन को सकारात्मक और नकारात्मक तरीके से प्रभावित करता है। यह प्रौद्योगिकी, व्यवसाय, मनोरंजन और सौंदर्यशास्त्र का संयोजन है, इन चार में से प्रत्येक की वर्तमान दुनिया में महत्वपूर्ण भूमिका है सिनेमा दृश्य और संगीत का बहुत शानदार मिश्रण है जिसके माध्यम से समाज को

हमेशा बुराई की तरह शिक्षित भी किया गया है और लोगों का मनोरंजन भी किया गया है सिनेमा को अगर हमारे समाज का प्रतिबिंब कहे तो गलत नहीं होगा सिनेमा के इतिहास को उठाकर देखें सिनेमा में हमारे जीवन को प्रभावी तरीके से संचालित किया है और हमारी जीवन शैली को बदलने में सिनेमा था एक महत्वपूर्ण योगदान है इमोशनल ड्रामा, कैंडी- फ्लॉस रोमांस से लेकर एक्शन-थ्रिलर तक, सिनेमा अपने परिवेश से समाज में नए नए चलन स्थापित करता आ रहा है।

एक सदी से भी अधिक की अपनी लंबी यात्रा में, सिनेमा ने खुद को जीवन आभासी तरीके से समाज में खुद को स्थापित किया है सामाजिक गतिशीलता ने हमेशा सिनेमा की सामग्री को विनियमित किया है। किसी भी फिल्म का मुख्य नायक खलनायकों से लड़ता है जो समकालीन सामाजिक बुराइयों की अभिव्यक्ति होते हैं पुरानी फिल्मों में पैसे के बदले जमीन लेने वाले, दहेज़ और आधुनिक काल के आतंकवादियों के पैरोकार व अन्य कई सामाजिक बुराइयों को बड़े ही शानदार तरीके से सिनेमा ने दिखाया है और उन को बदलने में प्रभावी भूमिका निभाई है। यह एक मंच प्रदान करता है जो अर्थव्यवस्था, राजनीति, तकनीकी प्रगति के विकास का प्रतिनिधित्व करता है। प्राचीन विश्व के इतिहास को जानने के लिए फिल्में उपयोगी हैं। दुनिया के से सबसे शक्तिशाली, संगठित, लोकप्रिय और प्रभावशाली उद्योग का नाम हॉलीवुड है जो कुल विश्व आबादी का मनोरंजन करता है

भारतीय सिनेमा का एक संक्षिप्त इतिहास:

दादा साहेब फाल्के ने अपने लंदन प्रवास के दौरान ईसा मसीह के जीवन पर आधारित एक फिल्म देखी और उस फिल्म को देखकर, उनकी पौराणिक कथाओं पर आधारित फिल्मों का निर्माण करने की इच्छा हुई घर आने के बाद, उन्होंने राजा हरिश्चंद्र नाम की फिल्म बनाई, जो भारत की पहली लंबी फिल्म थी और 03 मई 1913 को सुनहरे पर्दे पर रिलीज़ हुई थी। ध्वनिहीन होने के बावजूद, फिल्म ने लोगों का मनोरंजन या और दर्शकों द्वारा काफी सराहा गया। इसके बाद फिल्म निर्माण ने भारत में एक उद्योग का रूप ले लिया और यह तेजी से विकसित होने लगा। उन दिनों हिमांशु राय जर्मनी में थे। वे अपनी पत्नी देविका रानी के साथ घर लौटे और अपने देश में फिल्में बनाने लगे।

उनकी पत्नी देविका रानी खुद उनकी फिल्मों में नायिका हुआ करती थीं इस पति और पत्नी की जोड़ी को बहुत सफलता मिली और दोनों ने मिलकर बॉम्बे टॉकीज स्टूडियो की स्थापना की। भारतीय सिनेमा ने अपनी स्थापना के बाद से फिल्म निर्माण में इतने सारे बदलाव किए हैं की भारतीय सिनेमा की गिनती भी विश्व के श्रेष्ठ सिनेमा में होती है | आज के दौर में बनी फिल्में उसी भारतीय सिनेमा का हिस्सा हैं जो भारतीय समाज में चेतना जगाने का काम करती रही है। यह कहा जाता है कि सिनेमा किसी भी समाज को सही रास्ता दिखाने के लिए सबसे शक्तिशाली माध्यम है, क्योंकि सिनेमा दृश्य और श्रव्य दोनों का मिश्रित रूप है और यह सीधे मनुष्य के दिल को प्रभावित करता है।

फिल्मों के निर्विवाद असीम शक्ति:

पूरे इतिहास में, राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक रूप से दर्शकों की शक्ति समय समय पर प्रकट और शोषित दोनों हुई है। उदाहरण के लिए, एडोल्फ हिटलर जैसे नेताओं ने द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान प्रचार उपकरण के रूप में फिल्मों का सफलतापूर्वक उपयोग किया। इस तरह के तथ्य फिल्म की अपार और महत्वपूर्ण शक्ति को दर्शाते हैं: एक ऐसी शक्ति जिसने कई क्रांतियों को भी जन्म दिया है। जैसे-जैसे तकनीक

बढ़ती जा रही है, राजनीतिक और आर्थिक नेताओं ने अपने स्वयं के लाभ के लिए या लोगों के लाभ के लिए,उनके सुधार के दृष्टिकोण को बदलने और आकार देने में सिनेमा का उपयोग किया है। ऑडियो विज़ुअल अनुवाद इन दिनों सभी के लिए आसानी से उपलब्ध हैं और बेहद सस्ती हैं, जिससे फिल्म निर्माताओं के लिए दुनिया के सभी कोनों से अपने लक्षित दर्शकों तक पहुंचना आसान हो जाता है और वो भी उनकी मातृभाषा में।इस से सिनेमा का वैश्वीकरण हुआ है और दर्शक सिर्फ अपनी मातृभाषा तक ही सीमित नहीं रहे है

सिनेमाई कला का समाज और आधुनिक दुनिया पर प्रभाव:

भारतीय सिनेमा अपने आरंभिक काल से ही हमारी समाज का आईना रही है जो समाज में हो रही गतिविधियों को समय-समय पर रेखांकित करती आई है अपने दमदार कंटेंट और को प्रस्तुत करने के तरीके सिनेमा बहुत हर दिन तक है और सिनेमा की असीम शक्ति में समय-समय पर समाज और हमारी आधुनिक दुनिया को प्रभावित किया है बहुत सारी फिल्में हैं इनके डायलॉग और उन में दर्शाए हुए दृश्य हमारे समाज को प्रभावित करते आ रहे हैं और करेंगे|भारतीय सिनेमा की पहली फिल्म हो या वर्तमान की फिल्में हर पल में समाज में सकारात्मक और नकारात्मक दोनों प्रभाव डाले है

फिल्में हमारी संस्कृति का दर्पण:

फिल्म शुरू से भी हमारी समाज का दर्पण नहीं है सिनेमा जनसंचार का वह माध्यम है जो बहुत ही सुंदरता के साथ हमारी समाज से हमेशा प्रभावित रहा है और हमारे समाज को प्रभावित करता रहा है सिनेमा हमारे आम जनजीवन को बहरी शानदार अंदाज में प्रस्तुत करती है फिल्म कुछ नहीं है बल्कि कला साहित्य और साइंस का अभूतपूर्व मिश्रण है सिर्फ कहानियां मनोरंजन नहीं है बल्कि यह समाज का रियलिटी चेक भी करता है सिंबोसिस गोल्डन जुबली सीरीज के यूट्यूब के प्रसारण में बच्चों और टीचर्स के समक्ष बोलते हुए बॉलीवुड के जाने माने लेखक जावेद अख्तर ने कहा देवदास (1955) को तब फिल्माया गया था जब सामंती व्यवस्था प्रचलित थी। देवदास अपने माता-पिता के खिलाफ विद्रोह नहीं कर सकता था और खुद को नष्ट कर सकता था। लेकिन, युवा पीढ़ी के नायक उन चीजों के खिलाफ विरोध करते हैं जो देवदास नहीं कर सकते थे,यह दर्शाता है कि सिनेमा के माध्यम से हमारी समाज के अंदर बदलाव आ रहे हैं, फिल्में संस्कृति को आकार भी देती हैं और प्रभावित भी करती है

सिनेमा हमारे समाज में कैसे ट्रैंड स्थापित करता है:

सिनेमा ने समय-समय पर हमारे समाज पर बहुत सारे गहरे प्रभाव डाले है और युवाओं के समक्ष नए नए चलन भी स्थापित किए हैं सिनेमा और हमारे समाज का गहरा संबंध है इतना गहरा की दोनों को एक दूसरे का पूरक कहें तो गलत नहीं होगा सिनेमा हर जनमानस को दिल और दिमाग दोनों से प्रभावित करता है 1913 में भारतीय सिनेमा की पहली फिल्म आई थी तब से लेकर अब तक हमारे सिनेमा ने भी बहुत सारे परिवर्तन देखे हैं सिनेमा और समाज समांतर रूप से एक साथ चल रहे हैं

संस्कृति में ट्रेंड्स:

सिनेमा ने हमारी संस्कृति को बहुत प्रभावित किया है और सिनेमा की बदौलत ही हमारी संस्कृति में बहुत सारे नए ट्रेंड स्थापित हुए हैं हमारे समाज में शादी विवाह के समय में पारंपरिक संगीत बजने का चलन था लेकिन सिनेमा ने उसमें आमूलचूल बदलाव किए हैं अब लोग शादी ब्याह में फिल्मी गाने संगीत पर बजाते हैं और यहां तक की पूरी शादी को फिल्मी स्टाइल में संयोजित करते हैं शादी और संगीत के कार्यक्रम फिल्मों में दिखाए गए रुझानों से पूरी तरह प्रभावित होते हैं। शादी संगीत बॉलीवुड गानों के बिना पूरी नहीं होती है हम आपके हैं कौन के गानों ने और मैंने प्यार किया की अंताक्षरी ने शादी विवाह में होने वाले गीत संगीत के ट्रेंड को बिल्कुल बदल दिया था| फिल्म हमारी समाज का दर्पण ही तो है और हम आपके कौन फिल्म में इस बात का पूरा फायदा उठाया और शादी की जितनी भी रस्में थी उसको बेहतरीन अंदाज में फिल्माकर और नया फ्लेवर और कलेवर लगा कर और लेडीस संगीत में रचाया और बसाया यह केवल फिल्मों का ही प्रभाव है कि अब वेडिंग प्लानर फिल्मों के आधार पर वेडिंग प्लानिंग कर रहे हैं। हम आसानी से शादी के निमंत्रण पत्र इसकी झलक देख सकते है और आज कल शादी में में फिल्मी फूड काउंटर भी फ़िल्मी अंदाज में लगे आसानी से दिख जाते है आजकल लोग अपनी बर्थडे,एनिवर्सरी और अन्य पार्टी भी बॉलीवुड की थीम पर ही सेट करते हैं

पर्यटन में ट्रेंड्स:

सिनेमा लोगों के आने-जाने के लिए नए स्थानों और विदेशी स्थानों का पता लगाने के लिए सबसे बड़ा ट्रेंड सेटर और प्रमोटर है। सिलसिला, दिलवाले दुल्हनिया ले जायेंगे ,बचना एक हसीनों, कहो ना प्यार है काफी दृश्य भारत और विदेश के खूबसूरत स्थानों में फिल्माए गए हैं। फिल्मों की एक अंतहीन सूची है जो भारत के कुछ लोकप्रिय हिल स्टेशनों में शूट की गई थी। कश्मीर में गुलमर्ग और श्रीनगर, हिमाचल प्रदेश में मनाली, डलहौजी और शिमला, उत्तराखंड में नैनीताल, पश्चिम बंगाल में दार्जिलिंग, तमिलनाडु में ऊटी और केरल में वायनाड और मुन्नार हैं।

कश्मीर से प्रसिद्ध अभिनेता शम्मी कपूर का अविस्मरणीय प्रेम वास्तव में भारतीय पर्यटन के लिए एक श्रद्धांजलि है। याहू और ये चाँद सा रोशन चेहरा जैसे गीत में वह बर्फ से ढके पहाड़ों पर थिरकते हैं, जिसमें वह शर्मिला टैगोर को लुभाने की कोशिश करते हैं, कभी वो प्रसिद्ध डल झील पर शिकारे पर सवार हो कर गाने गाते है| तमसे अछा कौन है, अंदाज़, कश्मीर की कली और जंगल जैसी सुपरहिट फिल्मो की शूटिंग खूबसूरत कश्मीर घाटी में हुई थी। और इन खूबसूरत औरसुपरहिट फिल्मों ने लोगों की हनीमून डेस्टिनेशन और समर वेकेशन डेस्टिनेशन के रूप में प्रसिद्ध किया.| मिशन कश्मीर, लम्हे, रॉकस्टार, स्टूडेंट ऑफ द ईयर जैसी कई फिल्मों ने कश्मीर की भव्यता को दर्शाया है। 1966 की ब्लॉकबस्टर तमिल फिल्म अंबे वाला की शूटिंग हिमाचल प्रदेश के कुछ स्थानों पर की गई थी, जो दर्शाता है कि क्षेत्रीय फिल्म निर्माता बाहरी स्थानों पर कैसे आकर्षित होते हैं। हालिया बॉलीवुड ब्लॉकबस्टर, हाईवे एक और अच्छा उदाहरण है जिसने हिमाचल प्रदेश पर्यटन सुदूर सांगला और स्पीति घाटी को बढ़ावा देकर लोकप्रिय किया है। जब वी मेट के गीत 'ये इश्क हाय ' ने लेह-मनाली राजमार्ग को खूबसूरती से चित्रित किया है। इस फिल्म में कुल्लू जिले के नग्गर कैसल की सांस्कृतिक विरासत इमारत को भी दिखाया गया है। कुछ अन्य उल्लेखनीय भारतीय फिल्में जिनकी शूटिंग हिमाचल प्रदेश में हुई थी,हीना, रोजा, ताल, क्रिश, लुटेरा, देसमुदुरु और शिमला स्पेशल हैं।

वर्ष 1971 में नैनीताल भारतीय सिनेमा के उस दौर में आया जब राजेश खन्ना और आशा पारेख को - जिस गली में तेरा घर गाने के लिए नैनी झील में नौका विहार करते देखा गया। इसके बाद कई बॉलीवुड गाने जैसे वक़्त से- दिन है बहार के और सिर्फ तुम से पहली पहली बार मोहब्बत की शूटिंग नैनीताल में हुई। और इसके बाद नैनी झील नैनीताल के प्रमुख पर्यटन आकर्षणों में से एक बन गयी है दार्जिलिंग जो भारत में एक और लोकप्रिय हिल स्टेशन है, भारतीय फिल्म निर्माताओं के लिए एक उल्लेखनीय फिल्मांकन स्थल भी है। दार्जिलिंग में लोकप्रिय बॉलीवुड फिल्में जैसे आराधना मौसम, बर्फी और वाया दार्जिलिंग की प्रमुख शूटिंग हुई। दार्जिलिंग का सेंट पॉल स्कूल भी कई भारतीय फिल्मों के लिए एक लोकप्रिय शूटिंग स्थान रहा है। स्कूल में फिल्माई जाने वाली फिल्मों में से एक शाहरुख खान अभिनीत फिल्म मैं हूं ना है जिसने दार्जीलिंग कोपर्यटन के लिहाज से काफी महत्वपूर्ण बना दिया। मणिरत्नम की गीतांजलि, जो एक तेलगु फिल्म है, नाटकीय रूप से ऊटी, जो दक्षिण भारत के लोकप्रिय हिल स्टेशनों में से एक है, दर्शकों को हनीमून डेस्टिनेशन के रूप में पेश करती है। जबकि सलमान खान, संजय दत्त और माधुरी दीक्षित अभिनीत साजन को बड़े पैमाने पर ऊटी के ग्रीनस्केप में शूट किया गया था। फिल्म को कुछ सबसे खूबसूरत दृश्यों को बंगले और लॉज में शूट किया गया था जो ब्रिटिश राज की विरासत हैं।

राजनीति में ट्रेंड्स:

हमारे देश की राजनीति फिल्मों से अछूती नहीं रही है आजकल के बहुत सारे राजनेता अपने पॉलीटिकल कैंपेन को फिल्मो से प्रभावित होकर डिजाईन कर रहे हैं और बहुत सारी फ़िल्में भी राजनीति से प्रेरित होकर बन रही है अमूमन हम देखते हैं कि जिस तरह का फ़ैशन किसी राजनीति पर आधारित फ़िल्म में किसी राजनेता द्वारा पहना जाता है और वही ,फ़ैशन ट्रेंड हमारे राजनेताओं के आम जीवन में भी आ जाते हैं प्रकाश झा की प्रसिद्ध फ़िल्म राजनीति ने हमारे राजनेताओं को बहुत सारी फ़ैशन ट्रेंड्स दिए हैं

फैशन मे ट्रैंडस:

फैशन सबसे बड़ा क्षेत्र है जो प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से हमारे देश के लोगों की मानसिकता पर प्रभाव डालता है। लोग अपने प्रतिष्ठित नायक और नायिका की प्रत्येक शैली का पालन करते हैं चाहे वह बाल हो या ड्रेसिंग स्टाइल| अभिनेत्री साधना द्वारा अपनाया गया हेयर स्टाइल हमारे देश की महिलाओं के बीच साधना कट के रूप में प्रसिद्ध था । उस समय के और आजकल के एक्टर्स में से सलमान खान से लेकर कंगना तक के हेयर स्टाइल ने और करीना कपूर की सलवार से लेकर दीपिका पादुकोण तक के लहंगे ने आज की पीढ़ी को दीवाना बना रखा है| निम्नलिखित कुछ ट्रेंड्स है जिन्होंने समय-समय पर दर्शकों को उन्हें कॉपी करने पर मजबूर किया

कुछ कुछ होता है से काजोल का हेडस्कार्फ ट्रेंड:

कुछ कुछ होता है 90 के दशक की चार्टबस्टर थी। फिल्म में काजोल द्वारा पहनी गई हेडस्कार्फ का स्टाइल इतना लोकप्रिय हुआ कि लोगों ने अपनी आम जिंदगी में अपनाना शुरू कर दिया। मूवी में काजोल को अलग-अलग हेडस्कार्फ पहने देखा जा सकता है, जिस ने मूवी में उनके छोटे बालों के लुक में एक ट्विस्ट जोड़ा। बंटी और बबली से रानी मुखर्जी की कुर्ता सलवार का चलन: रानी मुखर्जी की 2005 की बंटी और बबली

रिलीज हुई। जब फिल्म रिलीज हुई, तो फिल्म में रानी का फैशन स्टेटमेंट एक बहुत बड़ा चलन बन गया कुर्ता सलवार और पटियाला सूट का सेट किया।

रिवॉल्वर रानी से कंगना रनौत के घुंघराले बालों का ट्रेंड:

जब यह घुंघराले बालों की बात आती है, तो कंगना रनौत बॉलीवुड की उन अभिनेत्रियों में से एक हैं, जिसने अपने घुंघराले बालों के स्टाइल से लाखों दिलों पर राज किया है जब कंगना रनौत स्टारर रिवॉल्वर रानी को रिलीज़ हुई थी फिल्म में उनके घर आने बालों वाला चाहे काफी लोकप्रिय हुआ था और एक नया फैशन ट्रेंड बन कर उभरा था

बोल बच्चन से प्राची देसाई की पैंट का ट्रेंड:

बोल बच्चन में प्राची देसाई द्वारा पहना जाने वाला ट्राउजर तब एक ट्रेंड बन गया था। कई प्रशंसकों द्वारा पतलून को बोल बच्चन पैंट के रूप में भी नामित किया गया था।

दबंग से सलमान खान की चुलबुल पांडे का चश्मा:

सुपरस्टार सलमान खान अपनी दबंग फ्रेंचाइजी में चुलबुल पांडे की भूमिका के लिए प्रसिद्ध हैं। चुलबुल पांडे ने कई ट्रेंड्स को जन्म दिया है जैसे कि हुड हुड दबंग गीत से बेल्ट नृत्य। हालाँकि, जिस तरह से सलमान खान ने अपने कॉलर के पीछे के चश्मे को टक किया, वह भी फिल्म रिलीज़ होने के बाद एक प्रमुख फैशन ट्रेंड बन गया।

मैं हूं ना फिल्म में सुष्मिता सेन का साड़ी पहनने का ट्रेंड

सुष्मिता सेन में हूँ ना में उन कम कमर वाली साड़ियों में एक देवी की तरह लग रही थीं। गोरी गोरी गाने में उन्होंने जो लाल साड़ी पहनी थी वह बेहद लोकप्रिय हुई।

वेक अप सिड से रणबीर कपूर की प्रिंटेड टी-शिर्ट्स का ट्रेंड:

रणबीर कपूर की प्रिंटेड टी-शर्ट जो उन्होंने वेक अप सिड में पहनी थी, बड़े पैमाने पर लोगों के बीच फैशन का चलन बन गया।

जब वी मेट से करीना कपूर की हैरम पैंट का ट्रेंड:

जब वी मेट फिल्म में करीना कपूर का गीत का चरित्र एक अविस्मरणीय चरित्र है। फिल्म में उनके द्वारा पहनी गई हैरम पेंट्स ने फैशन की दुनिया में नई क्रांति ला दी थी| सलवार के ऊपर टी-शर्ट पहनने का ट्रेंड भी करीना कपूर की इस फिल्म से कॉपी करके शुरू हुआ था

मिस्टर इंडिया से श्रीदेवी की नीली शिफॉन साड़ी का ट्रेंड:

श्रीदेवी की काटे नहीं कटते गाने में पहनी हुई नीले रंग की शिफॉन साड़ी मिस्टर इंडिया के रिलीज़ होते ही एक बड़ा फैशन ट्रेंड बन गयी ।तब प्रशंसकों ने कई बॉलीवुड अभिनेताओं को श्रीदेवी के अंदाज को आगे बढ़ाया जैसे रवीना टंडन टिप टिप बरसा पानी ।

साधना कट का ट्रेंड:

अभिनेत्री साधना ने अपनी फिल्मों के माध्यम से महिलाओं के हेयर स्टाइल को नए रूप में परिभाषित किया है अभिनेत्री साधना द्वारा फिल्मों में बनाए गए उनके हेयर स्टाइल को साधना कट नाम से जाना जाता है और उस समय भी साधना कट के लाखो दीवाने थे और आज भी उस साधना कट लाखों दीवाने है

अभिनेता देवानंद का ब्लैक एंड वाइट कपड़े पहनने का ट्रेंड:

अभिनेता देवानंद अपनी बेहतरीन अदाकारी के लिए मशहूर है और लोग उनके इतने दीवाने थे की फिल्म में वो जो कुछ पहन लेते थे वह एक नया फैशन ट्रेंड बन जाता था देवानंद द्वारा पहने गए ब्लैक एंड वाइट कपड़ो का बॉलीवुड के इतिहास में सबसे लोकप्रिय फैशन ट्रेंड्स में से एक है ट्रेंड है

मुमताज द्वारा साड़ी छह लेयर में पहनने का ट्रेंड:

आजकल तेरे मेरे प्यार के चर्चे मैं अभिनेत्री मुमताज द्वारा फैंसी साड़ी पहने का अंदाज इतना पॉपुलर हुआ उस समय में इस अंदाज में लाखों-करोड़ों को अपना दीवाना बनाया जो आज भी कायम है

जितेंद्र का सफेद वस्त्र पहनने का स्टाइल:

अभिनेता जितेंद्र ने अपनी कई फिल्मों में सफेद वस्त्र और सफेद जूते पहनकर फैशन का नया ट्रेंड शुरू किया और उनके द्वारा शुरू किया गया यह ट्रेंड आज भी कायम है और राजनीति के लोग इस ट्रेंड को अपना स्टेटस सिंबल भी मानते हैं

फिल्में जो पूरी की पूरी एक ट्रेंड एक बन गई:

बॉलीवुड के इतिहास में बहुत सारी फिल्में है जिनकी एक दो चीज नहीं बल्कि पूरीकी पूरी फिल्म ट्रेंड बन गई,ऐसी आईकॉनिक फिल्मों के गीत से लेकर कपड़ों तक और अभिनेता और अभिनेत्रियों के हेयर स्टाइल से लेकर उनके द्वारा बोले हुए डायलॉग तक लोकप्रिय हो कर कर एक नया ट्रेंडसेटर साबित हुए | निम्नलिखित वो फिल्मे हैं जो पूरी की पूरी ट्रेंडसेटर बन गई

फिल्में हम आपके हैं कौन:

राजश्री प्रोडक्शन की हम आपके हैं कौन! सदाबहार माधुरी दीक्षित और सलमान खान अभिनीत फिल्म 2015 में दो सफल दशक पूरे कर चुकी हैं। माधुरी दीक्षित का बैकलेस ब्लाउज हो या सलमान खान का थ्री पीस सूट वाला ट्रेंड छा गया था माधुरी द्वारा पहने गए ब्लाउज की तरह ही ब्लाउज बनाने के लिए टेलर्स को अलग से लिए कमीशन दिया जाता था और सफेद-और-हरे रंग के शरारे ने फैशन को नया नाम दिया।

लव इन शिमला:

साधना ने बॉलीवुड में प्रसिद्ध फ्रिंज हेयर स्टाइल पेश किया। उन्होंने अपनी पहली फिल्म लव इन शिमला में हेयरकट की झलक दिखाई। यह सुझाव उनके पति नैय्यर ने दिया, जो फिल्म के निर्देशक भी थे।

उसने सोचा कि फ्रिंज स्टाइल उसके माथे को संकीर्ण बना देगा। नैय्यर ने बॉलीवुड अभिनेत्री ऑड्रे हेपबर्न का उदाहरण दिया और वह साधना की बाल कटवाने की प्रेरणा बनीं।

आशिकी और तेरे नाम:

बॉलीवुड के म्यूजिकल ड्रामा आशिकी ने धुनों को गुनगुनाने का चलन तय किया था। हालांकि, इससे भी अधिक लोकप्रिय अनु अग्रवाल के रिबन बने थे। पोल्का डॉट्स के साथ उन नेट रिबंस की भारतीय बाजारों में बाढ़ आ गई थी । रिबन की तरह ही, फिल्म तेरे नाम से सलमान खान की हेयर स्टाइल ने भी सभी का ध्यान खींचा।

ब्रह्मचारी:

मुमताज ने अपनी नारंगी सिलाई वाली साड़ी के साथ एक अमिट छाप बनाई। इतना है, कि यह अब पीढ़ियों के लिए फैशन के रुझान का एक सहज हिस्सा बन गया है। मुमताज़ स्टाइल ड्रेप कर्व्स को हाइलाइट करता है और स्वैच्छिक भारतीय महिलाओं के लिए एक परफेक्ट स्टाइल बन गया है ।

करण जौहर की फिल्मो का कॉलेज कैंपस:

करण जौहर की फिल्में और ड्रीम कॉलेजों की एक श्रृंखला आपके दिमाग में आसानी से आ जायेगी। इस युवा निर्देशक ने 90 के दशक के अंत में अपनी फिल्मो के माध्यम से कुछ नए ट्रेंड सेट करने शुरू किये, और आज भी अपनी फिल्मों के माध्यम से उस सिलसिले को जारी रखे हुए है। कारन जोहर के निर्देशन में बनी फिल्म कुछ कुछ होता है ने कॉलेज को पूरी तरह से नया बना दिया। स्वेटशर्ट्स, माइक्रो-मिनी स्कर्ट, काजोल के बॉब बाल कटवाने, फ्रेंडशिप बैंड्स, हेड बैंड्स सभी एक पल में हिट हो गए। उनकी अन्य फिल्मों जैसे कभी खुशी कभी गम स्टूडेंट ऑफ द ईयर और स्टेट्स में भी कुछ फैशनेबल रुझान देखने को मिले।

निष्कर्ष:

फ़िल्म में हमारी समाज की सांस्कृतिक झलक ही नहीं बल्कि सांस्कृतिक दर्पण भी है फ़िल्में हमारे समाज को वो आइना दिखाती है जिसके प्रतिबिम्ब की छत्रछाया में हमारा समाज सकारात्मक और नकारात्मक दोनों पहलुओं पर आगे बढ़ता है और फ़िल्म का प्रभाव इतना व्यापक और पक्का है की समय समय पर फ़िल्मों ने दर्शकों की मानसिकता पर वो प्रभाव छोड़े हैं जिनका अनुसरण दर्शकों ने अपनी आम ज़िंदगी में भी किया है और उस अनुसरण को अपनी ज़िंदगी का ट्रेंड भी बनाया है विकासशील दुनिया में फिल्में जाहिर तौर पर बहुत प्रभावशाली हैं। और क्योंकि सकारात्मक प्रभाव नकारात्मक को पछाड़ते हैं, यह हमारा कर्तव्य है कि हम सही दर्शकों के लिए सही सामग्री का चयन करें और युवा मन को उस सामग्री से बचाएं जो उनकी भावनाओं और विचारों को भ्रष्ट करेगी।

संदर्भ :

Research Papers:

1. Pautz M. Argo and Zero Dark Thirty: Film, Government, and Audiences. Political Sci. Politics. 2015;48:120–128. doi: 10.1017/S1049096514001656.

2. Nabi R., Riddle K. Personality traits, television viewing and the cultivation effect. J. Broadcast. Electron. Media. 2008;52:327–348. doi: 10.1080/08838150802205181.
3. Perciful M.S., Meyer C. The Impact of Films on Viewer Attitudes towards People with Schizophrenia. Curr. Psychol. 2017;36:483–493. doi: 10.1007/s12144-016-9436-0.
4. Behav Sci (Basel). 2020 May; 10(5): 86. Published online 2020 May 2. doi: 10.3390/bs10050086.
5. Fearing, F. (1947). Influence of the Movies on Attitudes and Behavior. The Annals of the American Academy of Political and Social Science, 254, 70-79. Retrieved March 25, 2021, from http://www.jstor.org/stable/1026142.
6. Gupta, S.B. & Gupta, S. (2013). Representation of social issues in cinema with specific reference to Indian cinema: case study of Slumdog Millionaire. The Marketing Review.13(3), 271-282
7. Wanwarang Maisuwong, International Journal of Engineering Research & Technology (IJERT) Vol. 1 Issue 4, June – 2012.
8. Geetanjali Chandra, Social Impact of Indian Cinema – An Odyssey from Reel to Real, Global Media Journal (Arabian Edition) June 2019.
9. Dastidar, S. G. and Elliott, C. (2019). The Indian film industry in a changing international market. Journal of Cultural Economics.'Mauro Porto, 2012.
10. Media Power and Democratization in India: TV Globo and the Dilemmas of Political Accountability. New York: Routledge.'
11. Tejaswini Ganti, 2012. Producing Bollywood: Inside the Contemporary Hindi Film Industry. Durham, North Carolina: Duke University Press. p. 71.

Web Sites:

www.yourstory.com
www.timesofindia.com
www.touringindia.com
www.researchguides.dartmouth.edu/filmstudies